RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-01
January -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

जनसंचार का युग : एक अवलोकन

[1]महांतेश पाटील [2]डॉ. तबस्सुम खान

[1]शोधकर्त्ता, श्री सत्य साई विश्वविद्यालय ऑफ टेक्नौलाजी एण्ड मेडिकल साइन्सेस, सीहोर, एम.पी.

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 20 January 2019

Keywords
इतिहास, जनसंचार, युग

ABSTRACT

आज जनसंचार का युग है। जनसंचार का यह युग सदियों से चला आ रहा है। प्रश्न उठता है कि मानव ने अपना पहला संदेश कब दिया था या उसने यह संदेश कब प्राप्त किया जिससे संचार या जनसंचार का सूत्रपात हुआ। इस बारे में अपना–अपना दृष्टिकोण है। इससे पहले कि जनसंचार के सूत्रपात की बात करें, यह जानना जरूरी है कि जनसंचार शब्द है क्या ? 'जनसंचार'–इस शब्द समूह में प्रयुक्त शब्द 'संचार'–अर्थात् किसी बात को आगे 'बढ़ाना' या 'चलाना' या 'फैलाना'– की मूल धातु संस्कृत की 'चर' है। जिसका मतलब है 'चलना'। दूसरे शब्दों में जब किसी भाव या विचार या जानकारी को दूसरों तक पहुंचाते हैं, और यह प्रक्रिया सामूहिक पैमाने पर होती है तो इसे 'जनसंचार कहते हैं।

प्रस्तावना

जनसंचार का उद्देश्य जानकारी या विचारों को समाज के उन तमाम लोगों के लिए सांझा करना है जो इनसे सम्बन्ध है या जिन्हें यह जानकारी पहुंचाना उपेक्षित है, ताकि सभी लोग इनसे अवगत हो जाएं या इनका लाभ उठा सकें। इसके सूत्रपात के बारे में माना जाता है कि पवित्र बाईबल में स्वर्ग (अदन) की पुष्पवाटिका में बाबा आदम (आदिम मानव) और अम्मा हौवा (आदिम नारी) का जो आख्यान दिया गया है, उसमें संचार का सर्वप्रथम प्रस्फुटन दिखाई देता है। 'अम्मा हौवा' ने 'बाबा आदम' से कहा, क्यों ने हम वह फल खाएं जो ज्ञान के वृक्ष पर लगता है, जिसको खाने से हमें पाप और पुण्य का ज्ञान हो जाएगा।

जब से मानव जीवन पृथ्वी पर अवतरित हुआ तभी से संचार का भी उद्भव हुआ। यह माना जाता है कि सर्वप्रथम एडम व ईव के मध्य संचार तब प्रारम्भ हुआ जब ईव ने प्रतिबंधित फल खाने की इच्छा आदम पर जाहिर की। क्योंकि उस समय किसी भाषा या लिपि का आविष्कार नहीं हुआ था इसलिए यह बात इशारे से कही गई जो किसी संचार का पहला साधन बनी। भोजन पानी के बाद सबसे ज्यादा जरूरत जनसम्पर्क की होती है। विकसित संस्कृति व उन्नत सभ्यता में सम्पर्कों का सर्वाधिक योगदान है। जनसंचार की एक शाखा के रूप में जनसम्पर्क सामान्य अर्थो से उपर उठकर अलग अवधारणा को प्रस्तुत करता है।

साहित्य की समीक्षा

जी.एल. यादव (2011) ने वर्तमान युग में हिन्दी भाषा की समस्याओं और शैक्षिक उपलब्धियों में आवश्यकता के संबंध में कुछ पहलुओं का अध्ययन किया। मुख्य उद्देश्य हिन्दी भाषा की स्वीकृति, एकाग्रता और शैक्षणिक उपलब्धियों के प्रभाव का अध्ययन करना था। आज–कल संसार में जो भाषाएँ आदर्श रूप में समुन्नत तथा समृद्ध मानी जाती हैं, उन सबकी एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि उनके शब्दकोशों में प्रत्येक शब्द का बहुत ही वैज्ञानिक और व्यवस्थित रूप से सीमाबद्ध और स्पष्ट निरूपण होता है। ऐसा निरूपण होता है कि उसे एक बार अच्छी तरह देख लेने पर उसके अर्थ तथा प्रयोगों के सम्बन्ध में किसी प्रकार के भ्रम या सन्देह के लिए कोई अवकाश नहीं रह जाता। अर्थों के प्रकार के विवेचन से ही भाषा वास्तविक रूप से पुष्ट तथा प्रौढ़ होती है, उसका स्वरूप निखरता है और भाषा सचमुच उन भाषाओं के वर्ग में परिगणित होने के योग्य हो जाती है। हम हिन्दीभाषियों का भी यह प्रमुख कर्त्तव्य होना चाहिए कि हम हिन्दी शब्दों का ठीक और पूरा अर्थ–विवेचन करके उसे भी ऐसे उच्च स्तर तक पहुँचाने का प्रयत्न करें कि वह भी उन्नत भाषाओं के वर्ग में गिनी जाने लगे।

मौर्यकाल में भी इस कार्य के लिए समुचित व्यवस्था का निर्माण किया गया था। इस काल में गुप्तचर व्यवस्था अत्यन्त सशक्त और सुदृढ़ थी। यह व्यवस्था देश के बाहर भी सुव्यवस्थित रूप से अपनाई जाती थी। वस्तुतः भारत में यह व्यवस्था अंग्रेजों के आगमन तक प्रचलित रही है। इस व्यवस्था के पारम्परिक गुप्तचरों को आधुनिक पत्रकारों का पूर्वज कहा जाए तो यह गलत नहीं होगा। मध्य काल में भी सूचनाओं के आदान–प्रदान के लिए यह व्यवस्था सुचारू रूप से कार्यरत थी। मुगलों के भारत में आगमन के साथ ही संवाद क्षेत्रमें नवीन परिवर्तन होने लगे। इन्होंने व्यापक स्तर पर भारतीय गुप्तचर व्यवस्था में परिवर्तन किए और इसको अधिक प्रभावी बनाने का काफी प्रयास भी किया।

मुगल शासकों के समय में दरबारों में हर रोज की कार्यवाही पर दरबारी डायरी लिखने का प्रचलन था। यह परम्परा सन 1857 तक निरन्तर चलती रही थी तथा इसी पद्धति को ईस्ट इंडिया कंपनी ने थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अपनाया जो कि समाचार पत्रों के मुद्रण तक चलती रही। इसी काल में छत्रपति शिवाजी, नाना पंडनवीस तथा महाराणा प्रताप जैसे मराठी एवं राजपूत राजाओं के दरबार में भी यह परम्परा प्रचलित थी। इस काम के लिए बाकयदा वाक्या नवीस (समाचार लेखक) दरबार में रहा करते थे। परन्तु यह समाचार लेखन एवं संकलन का कार्य मात्र शासन के उपयोग के लिए होता था तथा इस कार्य की कोई निश्चित नियमावली भी प्रायः नहीं होती थी। इसे हर कोई देख या पढ भी नहीं सकता था। वस्तुतः यह सारी व्यवस्था शासन प्रबंधन तथा इतिहास के उपयोग के लिए होती थी, न कि सूचना आदान–प्रदान के लिए।

अंतिम मुगल बादशाह जफर ने इस परम्परा में परिवर्तन किया और सिराज–उल–अखबार से लेखन आरम्भ करवाया जिसे दरबारे–खास में बांटा जाता था। ऐसा उल्लेख हमें तत्कालीन दस्तावेजों से प्राप्त होता है। डा. राम रत्न भटनागर ने इसे पहला एवं अंतिम दरबारी पत्र स्वीकार किया है। परन्तु सिद्धांतः इस प्रयास को समाचार पत्र मानना उचित प्रतीत नही होता क्योंकि समाचार पत्र के लिए विशिष्ट एवं जनसामान्य के समाचारों से युक्त होना, मुद्रित होना तथा नियमित वितरण अनिवार्य शर्त है तथा यह बिक्री के लिए हर किसी को उपलब्ध होता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि यद्यपि ये सारे प्रयास समाचारमें नवीन परिवर्तन होने लगे। इन्होंने व्यापक स्तर पर भारतीय गुप्तचर व्यवस्था में परिवर्तन किए और इसको अधिक प्रभावी बनाने का काफी प्रयास भी किया।

मुगल शासकों के समय में दरबारों में हर रोज की कार्यवाही पर दरबारी डायरी लिखने का प्रचलन था। यह परम्परा सन 1857 तक निरन्तर चलती रही थी तथा इसी पद्धति को ईस्ट इंडिया कंपनी ने थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ अपनाया जो कि समाचार पत्रों के मुद्रण तक चलती रही। इसी काल में छत्रपति शिवाजी, नाना पंडनवीस तथा महाराणा प्रताप जैसे मराठी एवं राजपूत राजाओं के दरबार में भी यह परम्परा प्रचलित थी। इस काम के लिए बाकयदा वाक्या नवीस (समाचार लेखक) दरबार में रहा करते थे। परन्तु यह समाचार लेखन एवं संकलन का कार्य मात्र शासन के उपयोग के लिए होता था तथा इस कार्य की कोई निश्चित नियमावली भी प्रायः नहीं होती थी। इसे हर कोई देख या पढ भी नहीं सकता था। वस्तुतः यह सारी व्यवस्था शासन प्रबंधन तथा इतिहास के उपयोग के लिए होती थी, न कि सूचना आदान–प्रदान के लिए।

अंतिम मुगल बादशाह जफर ने इस परम्परा में परिवर्तन किया और सिराज–उल–अखबार से लेखन आरम्भ करवाया जिसे दरबारे–खास में बांटा जाता था। ऐसा उल्लेख हमें तत्कालीन दस्तावेजों से प्राप्त होता है। डा. राम रत्न भटनागर ने इसे पहला एवं अंतिम दरबारी पत्र स्वीकार किया है। परन्तु सिद्धांतः इस प्रयास को समाचार पत्र मानना उचित प्रतीत नही होता क्योंकि समाचार पत्र के लिए विशिष्ट एवं जनसामान्य के समाचारों से युक्त होना, मुद्रित होना तथा नियमित वितरण अनिवार्य शर्त है तथा यह बिक्री के लिए हर किसी को उपलब्ध होता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि यद्यपि ये सारे प्रयास समाचारकार्य करना था, तत्कालीन समाचार वाहक स्वतंत्रापूर्वक अपनी इच्छा से कार्य नहीं कर सकता था। लेकिन आज पत्रकार स्वच्छंद रूप से अपना कार्य करते हैं। भारत में पत्रकारिता के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हम इसके उद्भव और विकास के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

पत्रकारिता का अर्थ

समाज के विचारों और साहित्य की संवाहिका को पत्रकारिता के रूप में जाना जाता है जो समाज और साहित्य के इतिहास में अपना विशेष स्थान बनाकर उसका निर्माण करती है। ग्रंथों में समाहित साहित्य से जो संभव नहीं था वह आज पत्र–पत्रिकाओं के साहित्य ने साकार कर दिखाया है। स्वतंत्रता से पूर्व के पत्र स्वाधीनता संग्राम के लिए अस्त्र और शस्त्र के रूप में प्रयोग हुए, आंग्ल शासकों का कोपभाजन बनकर भारतीय पत्र–पत्रिकाओं ने समाज को नई दिशा प्रदान की। यंग इंडिया, हरिजन, आज, स्वदेश, कर्मभूमि, प्रताप, रणभेरी, सेनापति जैसे अनेक पत्रों ने भारतीय जनता को अत्याधिक प्रभावित किया।

स्वतंत्रता से पूर्व की पत्रकारिता तेजस्विनी, ओजस्विनी, निर्भय, परम न्यायपरायण तथा सर्वत्र पुण्य संचारिणी रही है। महर्षि अरविंद, भूपेन्द्रनाथ दत्त, डॉ. एनी बेसंट, गोपाल कृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, विपिन चन्द्र पाल, चितरंजनदास, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद आदि अनेक नेताओं ने राष्ट्र की सेवा हेतु पत्रों से अपना नाता जोड़ा। महान साहित्य विशेषज्ञ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, लाल खड्ग बहादुर मल्ल, अम्बिका प्रसार बस, गणेश शंकर विद्यार्थी, प्रताप नारायण मिश्र, मुंशी प्रेमचंद, बाबूराव विष्णु पराड़कर, माखनलाल चतुर्वेदी, लक्ष्मण नारायणगर्दे, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' तथा कृष्णदत्त पालीवाल ने पत्रकारिता को राष्ट्रीय नव जागरण का साधन स्वीकार किया और मिशन के रूप में इसको त्यागशील संघर्षमयी परम्परा का नियामक माना।

पत्रकारिता की परिभाषा

समय और समाज के संदर्भ में सजग रहकर नागरिकों के दायित्व बोध कराने की कला को पत्रकारिता की संज्ञा दी गई है। गीता में जगह–जगह पर शुभदृष्टि का प्रयोग है, यही शुभ दृष्टि पत्रकारिता है जिसमें गुणों को परखना और मंगलकारी तत्वों को प्रकाश में लाना सम्मिलित है। गांधी जी तो इसमें समदृष्टि को बल देते थे। समाजहित में सम्यक प्रकाशन को पत्रकारिता कहा जा सकता है। असत्य, अशिव

और असुन्दर पर सत्यं–शिवं–सुन्दरम की शंख ध्वनि ही पत्रकारिता है।

चैम्बर एवं न्यू वेब्स्टर्स डिक्शनरी के अनुसार प्रकाशन, सम्पादन, लेखन और प्रसारण युक्त समाचार माध्यम का व्यवसाय ही पत्रकारिता है। इन्द्र विद्यावाचस्पति के अनुसार समय और समाज के संदर्भ में सजग रहकर नागरिकों के दायित्व बोध कराने की कला को पत्रकारिता की संज्ञा दी गई है। समाचार पत्रों एवं विविध कालिक पत्रिकाओं के सम्पादन एवं लेखन और तत्संबंधी कार्यो को पत्रकारिता के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है। इस प्रकार समाचारों का संकलन, प्रसारण, विज्ञापन कला एवं पत्र का व्यावसायिक संगठन पत्रकारिता है। समसामयिक गतिविधियों के संचार से संबंध सभी साधन जैसे रेडियो और दूरदर्शन को भी इसी के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है। पत्रकारिता को कला वृति ओर जनसेवा के रूप में भी परिभाषित किया गया है।

पत्रकारिता के विभिन्न स्वरूप

जीवन की विविधता और नए नए साधनों की प्रचुरता ने पत्रकारिता को बहुआयामी बना दिया है। आज पत्रकार अपनी रूचि एवं प्रवृति के अनुसार अपने लिए विशिष्ट क्षेत्रों का चयन कर रहे हैं क्योंकि वर्तमान समय पूर्णतया विशिष्टीकरण की ओर अग्रसर है।

पत्रकारिता और स्वतंत्रता का बहुत गहरा संबंध है। मनुष्य की महिमा को कमजोर करने वाली हर प्रकार की पराधीनता के विरूद्ध सशक्त आवाज उठाना ही पत्रकारिता का मुख्य उद्धेश्य है। देश की आजादी की लड़ाई मुख्यतः पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से लड़ी गई। स्वतंत्रता संग्राम को गतिशील बनाने में पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिन्दी पत्रकारिता की शुरूआत 1826 में बंगाल से हुई। 30 मई 1826 को हिन्दी के पहले समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' का कलकत्ता से प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम एवं बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में कलकत्ता से अनेक विशेष पत्र पत्रिकाएं हिन्दी के शीर्षस्थ नामचीन पत्रकारों के सम्पादन में प्रकाशित हुई। हिन्दी के अनेक पत्रकारों की साधना भूमि कलकत्ता रही है। इन पत्रकारों ने लोकनायक की भूमिका का निर्वाह करते हुए हमेशा संघर्ष किया। इसी संघर्ष में पत्रकारिता के प्रकाशमान अतीत ने राष्ट्रीयता, जातीयता, संस्कृति भाषा और साहितत्व के विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

उपसंहार

भारत में संचार माध्यम का उदय हम प्राचीनकाल में भी खोज सकते हैं। नारदमुनि अपने काल में विश्व के सभी स्थानों का भ्रमण किया करते थे, जिससे संबंधित व्यक्ति तदानुसार अपना कार्य संपादन कर सके। इनका संबंध प्रारंभ से ही मानव जीवन से रहा है, ज्यों–ज्यों मानव ने विकास किया, संचार एवं जनसंचार के माध्यम में परिवर्तन हुआ। जैसे–जैसे मानव जागरूक होता गया नित नए आवष्किार होने लगे। पहले पहिए का आविष्कार हुआ, मानव के विचार भी उस पहिए की भांति चलने लगे। शिक्षा के प्रसार के साथ विज्ञान ने जन्म लिया। विज्ञान के चमत्कार से जिन बातों की मानव ने कभी कल्पना भी न की होगी वे बातें होने लगी। तार–बेतार का जन्म होने से सम्प्रेषण तेजी से होने लगा।

समाचार–पत्र, रेड़ियो, टेलीविजन, टेलीफोन का अस्तित्व इस धरती पर आया। समाज में रहते हुए हर मनुष्य यह अपेक्षा करता है कि वह देश–विदेश की घटनाओं से अवगत होता रहे। मानव स्वभाव में ही शामिल है कि वह अपने आस पास के परिवेश के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानना चाहता है। मनुष्य की इसी जिज्ञासा के फलस्वरूप जनसंचार के साधनों का आविष्कार हुआ है। आधुनिक युग में जनसंचार के अनेक साधन प्रचलित है जिसमें समाचार पत्र और पत्रिकाओं का अलग ही स्थान है। समाचार पत्र जनसंचार का सबसे पुराना साधन है। भारत में पत्रकारिता के आरम्भिक स्वरूप को हम पौराणिक युग में देख सकते हैं तथा इस दृष्टि से महर्षि नारद को आदि पत्रकार के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। वे लोगों को महान नायकों की कीर्ति कथा और महत्वपूर्ण सूचनाएं धैर्य और गंभीरता से सुनाते थे। रामायण और महाभारत काल में समाचार के संकलन और वितरण के लिए शासन द्वारा कई प्रबंध किए गए थे। ग्रंथों में इस बात का स्पष्ट वर्णन है। इस काम के लिए उस समय गुप्तचरों की मदद की जाती थी। आम सूचनाओं के लिए लोगों में डुग–डुगी बजाकर या इश्तहारों द्वारा राजकीय एवं महत्वपूर्ण सूचनाएं पहुंचाई जाती थी। इसलिए पत्रकारिता और जनसंचार का बहुत गहरा संबंध है।

संदर्भ

1. बेनेटडब्ल्यू लांसरेजिना जी लॉरेंसऔर स्टीवन लिविंगस्टन , जब प्रेस विफलता , इराक से कैटरीना तक राजनीतिक शक्ति और समाचार मीडिया, शिकागो।2007 शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस :
2. बर्कोवित्ज़डैनियल ए , " रिपोर्टर एंड उनके स्रोत", इन द हैंडबुक ऑफ जर्नलिज्म मैंकरेन वाहल जोर्जेसन और थॉमस-10215हनीट्स्च द्वारा संपादित, न्यूयॉर्करूटलेज :,।2009

3. कार्लसनमैट, जहां अनामितएक बदलते मीडिया पर्यावरण में पत्रकारिता और अनाम स्रोत , पत्रकारों मेंस्रोत और विश्वसनीयता3748नए परिप्रेक्ष्यबॉब फ्रेंकलिन और मैट कार्लसन द्वारा संपादित :, लंदनरूटलेज :,।2010
4. मैनुअल, संचार शक्ति, ऑक्सफोर्ड और न्यूयॉर्कऑक्सफोर्ड यूनिवर :्सिटी प्रेस,।2009